आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ. मनोरमा रमेश गुप्ता 'पिपरसानिया'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ. मनोरमा रमेश गुप्ता (पिपरसानिया)

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-163-3

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, डॉ. मनोरमा रमेश गुप्ता (पिपरसानिया)

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY MANORAMA RAMESH GUPTA PIPPARSANIYA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	अभिनंदन	6-7
2.	सनातन धर्मावलंबियों से प्रार्थना	8
3.	इस्लाम धर्मावलंबियों से अर्ज	9
4.	ईसाई धर्मावलंबियों से प्रार्थना	10
5.	बौद्ध धर्मावलंबियों से अनुनय	11
6.	जैन धर्मावलंबियों से विनती	12
7.	सिख धर्मावलंबियों से विनय	13
8.	मानव धर्म अनुयायियों से विनती	14
9.	देशवासियों से एक प्रार्थना	15-16
10.	निराशा में आशा की किरण	17
11.	सफलताएं	18
12.	साईं बाबा: एक प्रश्न	19
13.	समाज को जवाब	20
14.	कैक्टस	21

अभिनंदन

हे राष्ट्र महानायक तुमको अभिनंदन।
हे चिकित्सक, नर्स वृंद तुम्हे वंदन।।
हे सुरक्षाकर्मी, सफाईकर्मियों तम्हे नमन।
हे मीडियाकर्मी, हॉकर्स तुम्हे भी वंदन।।
हे भारत भूमि तुम्हें प्रणाम।

विपदा की घड़ी में दृढ़ संकल्प से।
इस लॉक डाउन के महाअस्त्र से।।
जनता को दिए, सुरक्षा क्षण, विश्राम।
ऐसे दिब्य महानायक को है सलाम।।
हे भारत भूमि तुम्हें प्रणाम।

दिन-रात चिकित्सा की दी सुविधा।
डॉक्टर,नर्स ने निर्भीक इलाज किया।।
मेडिकल स्टाफ जुटा है आठो याम।
इन दिव्य महा शक्तियों को सलाम।।
हे भारत भूमि तुम्हें प्रणाम।

जनता के गुस्से का हुए शिकार।
खाई खुद उन्होंने डंडों की मार।।
तनिक ना छोड़े सुरक्षा के काम।
ऐसे सुरक्षाकर्मियों को करे सलाम।।
हे भारत भूमि तुम्हें प्रणाम।

गली गली सैनिटाइज सफाई की।
थूक पत्थर की भी परवाह न की।।
ड्यूटी में फिर भी डटे रहे ये इंसान।
हे सफाई कर्मियों तुम्हें अनेक सलाम।।
हे भारत भूमि तुम्हें प्रणाम।

सनातन धर्मावलंबियों से प्रार्थना

आज महामानव बनकर, विश्व से कोरोना संक्रमण मिटाओ।
धर्म शास्त्रों की यथोचित व्याख्या से बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

विश्व का प्राचीनतम सनातन धर्म आज हमें स्मृत हो आया।
जिसने सगुण और निर्गुण भक्ति का पाठ संसार को पढ़ाया।।

पंच संप्रदायों से आत्मज्ञान और मोक्ष का सदमार्ग दर्शाया।
जीवात्मा अजर अमर अभेद्य है, जग को तुमने ही समझाया।।

हर जीवधारी में वही विराजित है, यह सब ईश्वर की माया।
पंचतत्व-अग्नि,जल, वायु, पृथ्वी, आकाश में भी वही समाया।।

चतुर्वेद- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद,अथर्ववेद का ज्ञान अपनाओ।
कर्म करो फल की इच्छा त्यागो, श्रीकृष्ण गीता सार दोहराओ।।

धर्म शास्त्रों की यथोचित व्याख्या से बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

इस्लाम धर्मावलंबियों से अर्ज

आज महामानव बनकर तुम विश्व से कोरोना संक्रमण मिटाओ।
धर्म शास्त्रों की यथोचित व्याख्या से बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हजरत मोहम्मद साहब ने सिखलाया।
पंचमूल स्तंभ- रसूल, नमाज, रोजा, जकात और हज को फैलाया।।

जीवन देने वाले अल्लाह के प्रति अपना कृतज्ञ भाव भी दर्शाया।
जिंदगी के कठिनतम क्षणों, बीमारी में अल्लाह को नहीं भुलाया।।

मानव के लिए सामर्थ्य अनुसार जकात, दान आवश्यक बतलाया।
रोजा से भूखे प्यासे रहकर, मानव की मनःस्थिति को समझाया।।

कुरान का आशय समझो जरूरतमंदों को सही राह दिखाओ।
हज पर जाने जैसा पुण्य कार्य है यह जीवन को आज बचाओ।।

धर्म शास्त्रों की यथोचित व्याख्या से बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

ईसाई धर्मावलंबियों से प्रार्थना

आज महामानव बनकर तुम विश्व से कोरोना संक्रमण मिटाओ।
धर्म शास्त्रों की यथोचित व्याख्या से बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

यहूदियों के अत्याचारों से जब विशाल जनसमुदाय घबराया।
वह अवतरित हुआ जेरूसलम भूमि पर ईश्वर पुत्र कहलाया।।

यहूदी धर्म के परिष्कृत रूप से मानव कल्याण करवाया।
ईश्वर को एक अनादि अनंत और सर्व शक्तिमान बतलाया।।

दया प्रेम मानवता भ्रातत्व का इस विश्व को पाठ पढ़ाया।
पवित्रतम ग्रंथ बाइबिल के द्वारा फिर मानव विश्वास बढ़ाया।।

मूर्ति पूजा के बदले दीन दुखियों की सेवा का भाव जगाओ।
"पाप से घृणा करो पापी से नहीं" विचार से पवित्र बन जाओ।।

धर्म शास्त्रों की यथोचित व्याख्या से बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

बौद्ध धर्मावलम्बियो से अनुनय

आज महामानव बनकर तुम विश्व से कोरोना संक्रमण मिटाओ।
धर्म शास्त्रों की यथोचित व्याख्या से, बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

मानवता का पाठ पढ़ाने ही मैं इस धरती पर आया।
तू तो है अति बलशाली क्यों मुझे समझ ना पाया।।

चीन विश्व की महाशक्ति है तू क्यों मुझसे घबराया।
विनाशकारी अस्त्रों शस्त्रों से भी मुझे जकड़ ना पाया।।

बोधिसत्व गौतम बुद्ध का शांति पाठ भी ना अपनाया।
अष्टांग और पंचशील सिद्धांतों को मानव ने आज भुलाया।।

"बुद्धम शरणम गच्छामि धम्मम शरणम गच्छामि" तुम गाओ।
बौद्ध धर्म के उच्च आत्मज्ञान से तुम विकार मुक्त जीवन पाओ।।

धर्म शास्त्रों की यथोचित व्याख्या से बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

जैन धर्मावलंबियों से विनती

आज महामानव बनकर विश्व से कोरोना संक्रमण मिटाओ।
धर्म शास्त्रों की उचित व्याख्या से बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

धन्य हुई वैशाली कुंडलपुर भूमि पर चौबीसवां तीर्थंकर आया।
इक्ष्वाकु वंश में जन्मा माँ त्रिशला सिद्धार्थ का लाल कहलाया।।

कठोर साधना निज तप संयम से आत्मज्ञान अलौकिक पाया।
वर्धमान से स्वामी महावीर बन, दिव्य-ज्ञान आलोक फैलाया।।

सम्यक ज्ञान, सम्यक दृष्टि, सम्यक चरित्र का त्रिरत्न पाठ पढ़ाया।
विश्व बंधुत्व अहिंसा परमो धर्म का उपदेश भी जग को समझाया।।

अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह के सद सिद्धांत व्यवहार में लाओ।
मानव कल्याण ही परम धर्म है, राष्ट्रहित में तुम जुट जाओ।।

धर्म शास्त्रों की यथोचित व्याख्या से बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

सिक्ख धर्मावलंबियों से एक विनय

आज महामानव बनकर विश्व से कोरोना संक्रमण मिटाओ।
धर्म शास्त्रों की यथोचित व्याख्या से बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

कार्तिक पूर्णिमा को धरती पर एक सिद्ध महापुरुष आया।
सिख संप्रदाय के प्रथम गुरु श्री नानक देव ने राष्ट्र बचाया।।

विषम समस्याओं से जूझते मानव को चिंता मुक्त कराया।
पांच ककार- कंघा, कड़ा, कच्छ, कृपाण, केश को धर्म बताया।।

निराकार निरंकारी भक्ति का संदेश जन जन तक पहुंचाया।
दश महागुरुओं ने समाज में देशभक्ति बलिदान जोश जगाया।।

मूर्ति पूजा के घोर विरोधी "गुरु ग्रंथ साहिब"का उपदेश फैलाओ।
अपने हाथों से दीन हीन जरूरतमंदों की सेवा का बीड़ा उठाओ।।

धर्म शास्त्रों की यथोचित व्याख्या से बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

मानव-धर्म अनुयायियों से विनती

आज महामानव बनकर विश्व से कोरोना संक्रमण मिटाओ।
धर्म शास्त्रों की यथोचित व्याख्या से बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

परिवार,स्वजनों के प्रति अपने कर्तव्यों का दायित्व उठाता।
साथी, संगी, निज सेवक जन के कष्टों को जो भी दूर हटाता।।

पर पीड़ा से द्रवित होकर जो तन मन धन से दुखों को हरता।
स्वजनों सम उन्हें समझ कर निज सुख बलिदान भी करता।।

वसुधैव कुटुंबकम के भावों से विश्व समस्याओं को भी सुलझाता।
त्याग, जाति, धर्म, संस्कृति, भाषा द्वेष विश्व बंधुत्व शांति फैलाता।।

आराध्य देवों को हाथ जोड़कर तुम मानव सबका कल्याण मनाओ।
है मानव धर्म सुनो,यही साथियों मिलजुल कर सहयोग मैत्री बढ़ाओ।।

धर्म शास्त्रों की यथोचित व्याख्या से बहुमूल्य जीवन बचाओ।।

देशवासियों से एक प्रार्थना

भारतवर्ष है एक शांतिप्रिय देश।
देश हित में सजे पहन गणवेश।।

है अब लक्ष्य हमारा परम महान।
हो सबको अपने गौरव का ज्ञान।।

करो परिश्रम तुम चित्त लगाकर।
कोरोना मिटाना है घर में रहकर।।

घबराओ मत बस लगे रहो तुम।
सदा धैर्य रखो पर जुटे रहो तुम।।

उत्तेजित मत होना तुम वीर कभी।
झेलो जीवन के झंझावात सभी।।

थक जाएंगी फिर स्वयं आपत्तियां।
दूर हटाएंगे हम सभी विपत्तियां।।

यदि साथ हे सत्य, प्रेम, सत्कार।
मिलेगी विजय सफलता अपार।।

श्रद्धा, सदाचार, सहयोग, उपकार।
है यही ज्ञान के शुभ उपहार।।

अपना सुख ही तुम मत देखो।
अपनी सुविधाएं ही मत लेखो।।

आखे खोलकर देखो चारों ओर।
शासन प्रशासन की सेवाएं कठोर।।

कर रहे प्रयास कैसे हो कोरोना दूर।
डॉक्टर नर्स दे रहे है सेवाएं भरपूर।।

इस लक्ष्य को बना लो सब अपना।
तभी होगा पूरा भारत का सपना।।

निराशा में आशा की किरण

बिखर गए सुमन आशा के,
तो क्या निराश हो जाऊं मैं?

टूट गया महल सपनों का,
तो क्या अरमान दबाऊं मैं?

जीवन को यूं व्यर्थ समझकर,
क्या आत्मविश्वास गवाऊं मैं?

कंटकमय यह मार्ग देखकर,
फिर क्या पीछे हट जाऊं मैं?

नहीं, नहीं, नहीं!
बिखरे पुष्पों का ईत्र बनाकर,
अपने जीवन को ही महकाओं

दृढ़ संकल्प शक्ति की नींव पर,
अडिग भव्य भवन भी बनाओ

सद्विचारों के नवविहान से तुम,
अपना सोया विश्वास जगाओ।

कलियां बिखराओ निज पथ पर
बढ़ो तुम! कायर मत कहलाओ।

सफलताएं

यूं ही नहीं मिलती है जीवन में सफलताएं,
सहनी होती है कठिनतम विपदा- आपदाएं।

कभी चुभ जाते हैं पांव में अभावों के कंटक,
कभी अपने ही रख देते हैं रास्ते में पत्थर।

दुख तकलीफों से जब टूट जाती है हिम्मत,
हम अनायास ही तब कोसते अपनी किस्मत।

दूर लगती है हमें मंजिल तो कैसे पहुंच पाएंगे,
जीतने की आस दिल में तो कैसे हार जाएंगे?

हटाकर रस्ते के पत्थर अपने कदम बढ़ाएंगे
मेहनत के फूल बिछा कर कांटे सभी उठाएंगे।

संघर्षों को गले लगा कर पथ पर बढ़ते जाएंगे
मिले असफलता अगर फिर भी ना घबराएगे।

आज यदि रात काली कल नया सवेरा आएगा
साहस विश्वास से झोली भर खुशियां तू पाएगा।

"साईं बाबा" एक प्रश्न समाज से

उठे अनेक प्रश्न उनके ही नाम।
करते हैं हम सब जिन्हें प्रणाम।।

साईं बाबा कौन थे?
किस वंश जाति के थे?
कहां से ये आए थे?
वे हिंदू थे या मुसलमान?
उठे अनेक प्रश्न उनके ही नाम।

कहां है उनका परिवार?
कौन उनके माता-पिता?
कौन थे उनके रिश्तेदार?
कहां उनके भाई बहन, जहान?
उठे अनेक प्रश्न उनके ही नाम।

आखिर क्यों करते हैं?
हम ऐसे व्यर्थ सवाल,
संकीर्ण विचारों से प्रहार,
क्यों मचा देते हैं वाक घमासान?
उठे अनेक प्रश्न उनके ही नाम।

क्यों करते प्रकृति की बात,
आपदाओं विपदाओं के साथ,
किसी आस्था पर कुठाराघात,
है सर्व धर्म आस्था एक समान।
उठे अनेक प्रश्न उनके ही नाम।

"साईं बाबा" समाज को जवाब हमारे

ना दे हम ऐसे अप्रिय बयान।
करते हैं हम सब जिन्हें प्रणाम।।

साईं बाबा ना हिंदू थे,
ना थे वे मुस्लिम फकीर,
वे थे एक रमता जोगी
बस रहते निर्मल नीर समान।
ना दे हम ऐसे अप्रिय बयान।।

वन्य पशु पक्षी उनका परिवार,
धरती आसमा उनके माता-पिता,
भूले भटके राही ही रिश्तेदार,
भाई बहन थे दीन-दुखी इंसान।
ना दे हम ऐसे अप्रिय बयान।।

ना थी अपनी कोई परवाह,
ना किया कोई धन संग्रह,
जहां मंडराए दुख के बादल,
बरसाई असीम कृपा, कल्याण।
ना दे हम ऐसे अप्रिय बयान।।

हर युग में ही मानव गुजरा,
कठिन परीक्षा की घड़ियों से,
अदम्य साहस सहयोग से,
किया सदैव ही जग को हैरान।
ना दे हम ऐसे अप्रिय बयान।

कैक्टस

क्या होते हैं यह कैक्टस?

कंटकमय, जालों में उलझे, चंद नन्हे-नन्हे फूल,
कोई जिंदगी है इन फूलों की। हाय,...।

ये खिलते तो हैं पर, कोई ख़ुशबू नहीं बिखेरते,
आयोजनो की शोभा नहीं बढ़ाते,
माला में भी नहीं गूथे जाते। आखिर क्यों?

किसी में साहस नहीं होता, इन्हें माला में गूँथने का,
उंगलियां आहत करने का, उनके समीप पहुंचने का।

जी हां!

इसलिए नहीं कि कैक्टस में कोई सौंदर्य नहीं होता,
भीनी खुशबू नहीं होती, चित्-आकर्षण नहीं होता।

बल्कि इसलिए कि इनके मोह में पड़कर,
कोई अपनी नाज़ुक उंगलियां, आहत कर नहीं सकता,
तीखी चुभन सह नहीं सकता।

बेशक-

कैक्टस खूबसूरत नहीं होता, गुलाब डहेलिया सूरजमुखी जैसा,

मादक गंधमय नहीं होता, चंपा चमेली और मोगरे की तरह,

किंतु फिर भी- पसंद सबकी ज़ुदा-ज़ुदा है,
चाहत भी, अपनी-अपनी है,
कोई पुष्पों के सौंदर्य पर फिदा है, कोई उनकी मादक खुश्बू पर।

लेकिन कहिए-

क्या कभी किसी को, कैक्टस से भी प्यार हुआ है,
कभी किसी ने साहस किया है उनके कांटों की चुभन सहने का,

हां मैंने- कैक्टस से मैंने प्यार किया है,
पौधे लगाए हैं, अपने आंगन में,
घंटों बिताए हैं मैंने उनकी, देखरेख और सेवासुश्रुषा में।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

डॉ. मनोरमा रमेश गुप्ता
(पिपरसानिया)

२५० दक्षिण मिलौनीगंज,
पोस्ट आफिस गली, जबलपुर (म.प्र.)

Mobile- 9993253556, 9300109040

शुभम करोति कल्याणम आरोग्यम् धनसंपदाम।
शत्रु बुद्धि विनाशाय दीप ज्योति नमोस्तुते।।

हे दीपक आप शुभ कर्ता हैं, शत्रुओं की बुद्धि का विनाश करें। सभी को आरोग्य प्रदान करके विश्व का कल्याण करें।।

विपत्ति की इस घड़ी में हमारे प्रधानमंत्री जी एक आशा दीप हैं, जिन्होंने कोरोना महामारी के विरुद्ध जो साहसिक एवं सराहनीय कदम उठाए हैं, उसके लिए संपूर्ण भारतवर्ष सदैव उनका ऋणी रहेगा।

हमारे देश में पुलिस, नर्स, डॉक्टर, मेडिकल स्टाफ, सफाई कर्मी और मीडिया जो अथक सेवाएं प्रदान कर रहे हैं और गृह स्वामनियों ने परिवार को गृह कुशलता से बांधकर रखा है उन सब का अभिनंदन करती हूं।

मैंने अपनी पुस्तक में समस्त देशवासियों को समस्त धर्मों के प्रमुख अनुकरणीय सिद्धांतों को स्मृत करवा कर उनसे पूर्ण सहयोग की कामना की है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-163-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/